दीपान्विति

घटनाओं, विचारों और कहानियों की कड़ियाँ

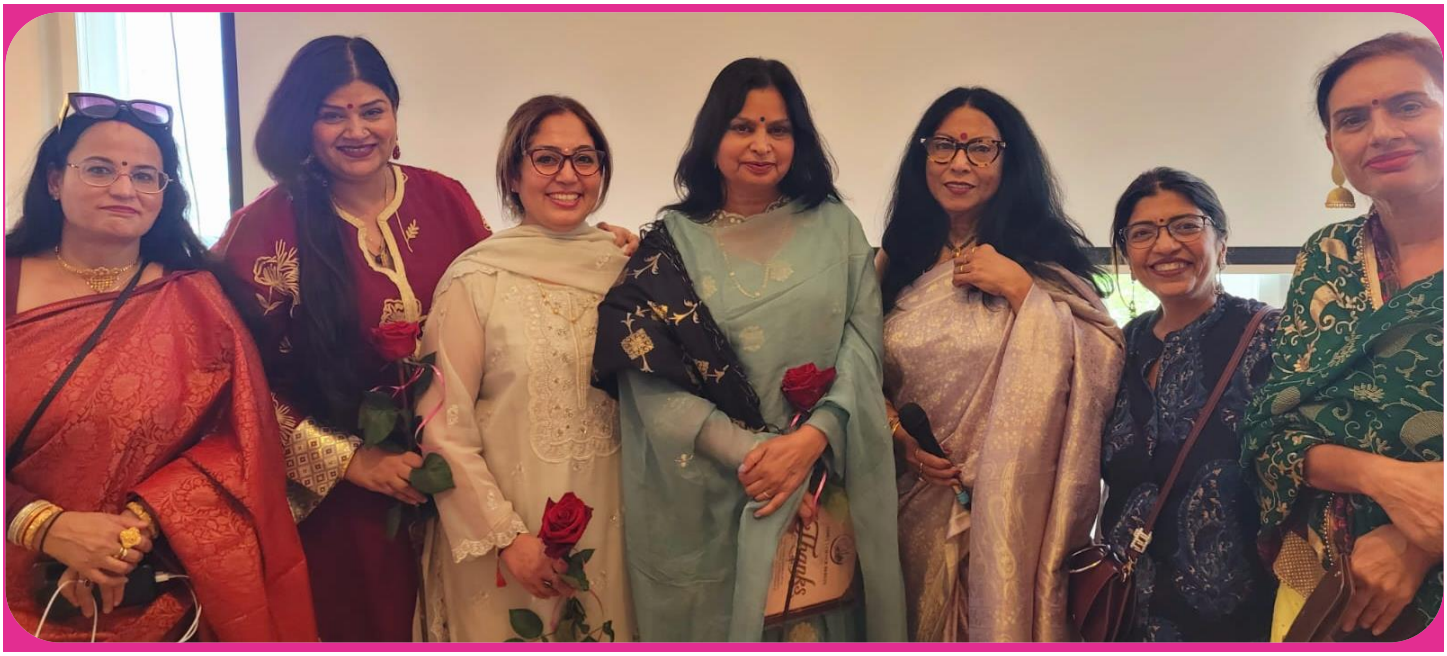

वैश्विक संगोष्ठी

विदेशी हिन्दी सेवियों का सम्मान

वैश्विक हिंदी परिवार के साप्ताहिक रविवारीय आभासी संगोष्ठी में विदेशी मूल के हिन्दी सेवियों का सम्मान; पूरी खबर पढ़े पृष्ट 2-6!

लेडीज़ कॉर्नर

40वी वर्षगाँठ सफलतापूर्वक संपन्न

बर्लिन के प्रतिष्ठित महिला समूह लेडिज़ कार्नर ने रंगारंग कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास से मनाया 40वीं वर्षगाँठ; पूरी खबर पृष्ठ 6 – 7.

गतिविधियाँ

बर्लिन में त्योहारों का सिलसिला

अक्टूबर आते ही बर्लिन के विभिन्न समूहों में उल्लास का माहौल; एक तरफ भारतीय त्यौहार, दूसरी तरफ जर्मनों का फेस्टिवल; पढ़ें पृष्ठ 8.



कविता, कहानी, लेख आमंत्रित हैं!

अपनी रचनाओं को दें प्रकाशन की उड़ान! अपनी स्वरचित अप्रकाशित रचनाएँ अथवा अपने सुझाव भेजें: deepadineshneel@gmail.com

पद्मश्री डॉ. ल्युदमिला वित्तोरोव्ना खोखलोवा

रूस की धरती पर जन्मीं एक विदुषी, जिन्होंने हिन्दी और भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन और शोध को अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी की प्रतिष्ठित भारतीय भाषा विदुषी हैं। कमाल की बात यह है कि भारत में रहे बिना ही उन्होंने हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मारवाड़ी जैसी भारतीय भाषाएँ सीखीं। वे पिछले 50 वर्षों से भारतीय इतिहास और दर्शन को मास्को यूनिवर्सिटी में जीवंत कर रही हैं। भारत के प्रति उनकी निष्ठां का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने जून 2026 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है। हाल ही में उन्हें वैश्विक हिन्दी परिवार से भी सम्मान दिया गया।



विदेशी मूल के हिन्दी प्रेमियों का सम्मान

वैश्विक हिंदी परिवार का साप्ताहिक कार्यक्रम बना ऐतिहासिक

विगत 27 सितम्बर को लेखक गाँव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, वातायन तथा भारतीय भाषा मंच के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार ने “विदेशी मूल के हिंदी सेवियों का सम्मान” का आभासी कार्यक्रम आयोजित किया। इसके अंतर्गत पाँच देशों – रशिया, युक्रेन, स्वीडन, जर्मनी और जापान के हिन्दी साधकों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में जर्मनी, इंग्लैंड, बर्मिंघम, सिंगापूर, अमेरिका, कनाडा समेत भारत के विभिन्न शहरों से अनेकों बुद्धिजीवियों ने हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम भारतीय भाषा और संस्कृति के प्रति

“हम सब एक ही सपना देखते हैं कि हिन्दी का क्षेत्र बढ़ जाए; हिंदी सायंस में तथा दूसरे क्षेत्रों में भी आगे बढ़े!”

समर्पण का साक्षी है और साक्षी है उस भाव का जो वसुधैव कुटुम्बकम को यथार्थ रूप देता है। अपने संबोधन में युक्रेन के हिन्दी विशेषज्ञ प्रो. यूरी बोत्विन्किन ने बताया कि वहाँ की स्थिति किसी से छुपी नहीं है, अभी भी हवाई सायरन बज रहे हैं किन्तु वे इस कार्यक्रम के प्रति अधिक इच्छुक हैं क्योंकि यह अधिक आवश्यक है। प्रो. यूरी ने कहा की भाषा की सेवा करते-करते यदि वे शहीद भी हो जाएँ तो गम नहीं, क्योंकि वह एक नेक कार्य होगा। वे कहते हैं कि किसी और संस्कृतिक वातावरण में वे स्वयं की कल्पना नहीं कर सकते। उनका यह हिंदी प्रेम वास्तव में भारतीयों के लिए भी सीखने योग्य है। जर्मनी के हाइडलबर्ग से द्रौपदी प्रकाशन के संस्थापक और प्रकाशक क्रिस्टियन वाइस की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष अर्थ दिया। क्रिस्टियन सीधे तौर पर हिन्दी से नहीं जुड़े हैं, न ही हिन्दी में सहज हैं, किन्तु भारतीय साहित्य को जर्मनी में लोकप्रिय बनाने में उनकी महती भूमिका है। अंगेज़ी में दिए अपने उद्बोधन में उन्होंने बताया कि वास्तव में भारतीय साहित्य, विशेषकर हिन्दी, बांग्ला, उर्दू और तमिल बहुत समृद्ध है। वे पिछले कई वर्षों से इनका जर्मन अनुवाद कर जर्मन पाठकों के लिए उपलब्ध करा रहे हैं। अब तक उन्होंने 30 हिन्दी, 8 तमिल, 7 बांग्ला, 4 उर्दू, 3 मलयालम और कुछ अन्य मराठी एवं कन्नड़ पुस्तकों का जर्मन अनुवाद प्रकाशित किया है। दौपदी प्रकाशन के कार्यों और पुस्तकों की विस्तृत जानकारी देते हुए क्रिस्टियन ने कई प्रख्यात भारतीय साहित्यकारों के नाम लिए तथा उनकी पुस्तकों के विषय में बताया। यह द्रपादी प्रकाशन के कार्यों का तीसरा चरण है। उनके इस साहित्यिक योगदान के लिए वर्ष 2007 में जर्मन-इंडियन सोसायटी ने उन्हें गिसेला बॉन पुरस्कार से सम्मानित किया था।



प्रो. यूरी बोत्विन्किन, युक्रेन

वे कीव स्थित तारास शेवचेंको नेशनल यूनिवर्सिटी में हिन्दी एवं भारतीय साहित्य केन्द्र के निदेशक हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं, भारतीय साहित्य, इतिहास और कला के अध्येता के रूप में उन्होंने यूक्रेन की नई पीढ़ी को भारत से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने हिन्दी को यूक्रेन में केवल पढ़ाया नहीं है, बल्कि उसे वहाँ सुनाया, गाया, दिखाया और जिया है। वे सच्चे अर्थों में हिन्दी-साधक हैं।

.... विदेशी मूल के हिन्दी प्रेमी

कार्यक्रम के अगले अतिथि स्वीडन से प्रोफ़ेसर हाइन्ज़ वेस्स्लर ने हिन्दी की व्यावहारिक समस्याओं की ओर इंगित करते हुए कहा कि रोज़गार की दृष्टि से हिन्दी में अभी बहुत कार्य की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लोगों में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, किन्तु रोज़गार के अवसर कम हैं। हमें हिन्दी में रोज़गार के लिए अनेकों प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रो. हाइन्ज़ की हिन्दी में सहजता और हिन्दी के उत्थान के प्रति उनकी चिंता दोनों आश्चर्यचकित करने वाली है। एक विदेशी मूल के हिन्दी सेवी के मन में हिन्दी के प्रति ऐसी आस्था देख कर मन प्रफ्फुल्लित हो जाता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम से जुड़ीं रुसी विदुषी डॉ. ल्युदमिला खोखलोवा की हिंदी साधना भी उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की अध्ययन यात्रा का ज़िक्र करते हुए अपने गुरुओं को याद किया जिन्होंने प्रतिदिनं 8 -8 घंटों तक उन्हें हिन्दी, पंजाबी, मारवाड़ी जैसी भाषाओं का ज्ञान दिया और उन्हें इन भाषाओं में दक्ष बनाया। उन्होंने मास्को विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं के शिक्षण के साथ-साथ अनुवाद के भी कई कार्य किए। इनमें जपजी का रुसी अनुवाद उल्लेखनीय है।

जापान में हिंदी के पुरोधा कहे जाने वाले डॉ. तोमियो मिज़ोकामी की उपस्थिति ने कायर्क्रम को ऐतिहासिक महत्त्व का बना दिया। ऐसा पहली बार था जब भारत से बाहर बसे पाँच अलग-अलग देशों में भारतीय ज्ञान, संस्कृति और शिक्षा को विस्तार देने वाले शिक्षाविद् एक मंच पर एक साथ उपस्थित थे, सम्मानित हो रहे थे।

प्रो. हाइन्ज़ वर्नर वेस्स्लर, स्वीडन

उप्साला विश्वविद्यालय, स्वीडन में इंडोलॉजी के प्रोफेसर, आधुनिक दक्षिण एशियाई भाषाओं और संस्कृतियों के विशेषज्ञ प्रो. हाइंज़ वर्नर वेस्स्लर ने बॉन, दिल्ली और ज़्यूरिख में इंडोलॉजी, तुलनात्मक धर्म और संगीतशास्त्र का अध्ययन किया है। संस्कृत के महाकाव्यों से आधुनिक हिन्दी और उर्दू साहित्य भारतीय भाषा, संस्कृति, धर्म और समाज की गहरी समझ रखते हैं। प्रेमचंद से लेकर फणीश्वरनाथ रेणु, दलित और आदिवासी साहित्य तथा हिन्दी के वैश्विक स्वरूप तक, इनकी रूचि का विस्तार अत्यंत प्रभावशाली है। इनकी हिन्दी सेवा को विश्व हिन्दी सम्मान, जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार और कामिल बुल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



क्रिस्टियन वाइज़, द्रौपदी प्रकाशन, जर्मनी

भारतीय साहित्य को जर्मन पाठकों तक पहुँचाने में क्रिस्टियन वाइज़ की महती भूमिका है। 2003 में हाइडलबर्ग, जर्मनी में इन्होंने द्रौपदी प्रकाशन की स्थापना की और हिन्दी, बांग्ला, उर्दू, तमिल, मलयालम, कन्नड़ समेत कई भारतीय पुस्तकों का जर्मन अनुवाद प्रकाशित कर भारतीय-जर्मनी के बीच एक साहित्यिक सेतु बनाया। उनकी यात्रा हमें यह बताती है कि अनुवाद केवल भाषा बदलना नहीं है; अनुवाद एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति के घर तक ले जाना है। साहित्य साधना के उनके जज़्बे को सादर प्रणाम!



.... विदेशी मूल के हिन्दी प्रेमी

डॉ. मिज़ोकामी ने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि हिन्दी उन्हें अपनी भाषा लगती है। भाषा केवल पढने-पढ़ाने तक सीमित नहीं रहता; उसके संस्कार उसकी संस्कृति साथ हो ही जाते हैं। इन सभी अतिथियों की बातों से एक बात स्पष्ट रूप से सामने आई कि ये सभी केवल भारतीय भाषाओं से ही प्रेम नहीं करते, भारत के लिए भी श्रद्धा भाव रखते हैं। प्रो. वेस्स्लर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि दुनिया में जो युद्ध की स्थिति बनी हुई है, भाषा उसका सबसे अच्छा समाधान हो सकता है और हिन्दी से बेहतर विकल्प आज के समय में दूसरा नहीं है। रशिया और युक्रेन के शिक्षाविदों का एक मंच पर होना इसका जीता-जागता प्रमाण है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री, साहित्यकार और लेखक गाँव के संस्थापक डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने इस अवसर पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर करते हुए कहा कि कार्यक्रम की विशेषता इसका यही विस्तार है जो आज इस मंच पर सिमट आया है। उन्होंने सभी अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि हिन्दी की महत्ता का सबको आभास है किन्तु इसकी जिन समस्याओं को यहाँ रेखांकित किया गया है उसे हम सब मिल कर अवश्य दूर करेंगे। वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष अनिल जोशी ने अपनी हिन्दी के प्रति समर्पण बरकरार रखते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य वैश्विक साहित्य के रूप में सामने आता है। उन्होंने विदेशों में हो रहे हिन्दी के कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि वहाँ गुणवत्ता और शब्दों के चयन पर गहन चिंतन कर ही प्रयोग किया जाता है जो सराहनीय और सीखने योग्य है।



प्रो. डॉ. तोमियो मिज़ोकामी, जापान

प्रोफेसर एमेरिटस डॉ. तोमियो मिजोकामी ने हिन्दी द्वारा भारत से अपना रिश्ता बनाया और भारतीय भाषाओं और संस्कृतियों को यहाँ से मीलों दूर जापान में स्थापित किया। 1965 में वे पहली बार भारत आए और इलाहाबाद में हिन्दी तथा विश्व भारती, शांतिनिकेतन में बांग्ला का अध्ययन किया। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में उच्च शिक्षा और शोध किया। उन्होंने पहले कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कली में पंजाबी पढ़ाया और फिर अपना जीवन जापान के ओसाका विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन को समर्पित कर दिया। उनकी भाषा निष्ठां को देखते हुए भारत सरकार ने 2018 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। हिन्दी जगत में वे एक पुरोधा के रूप में देखे जाते हैं।

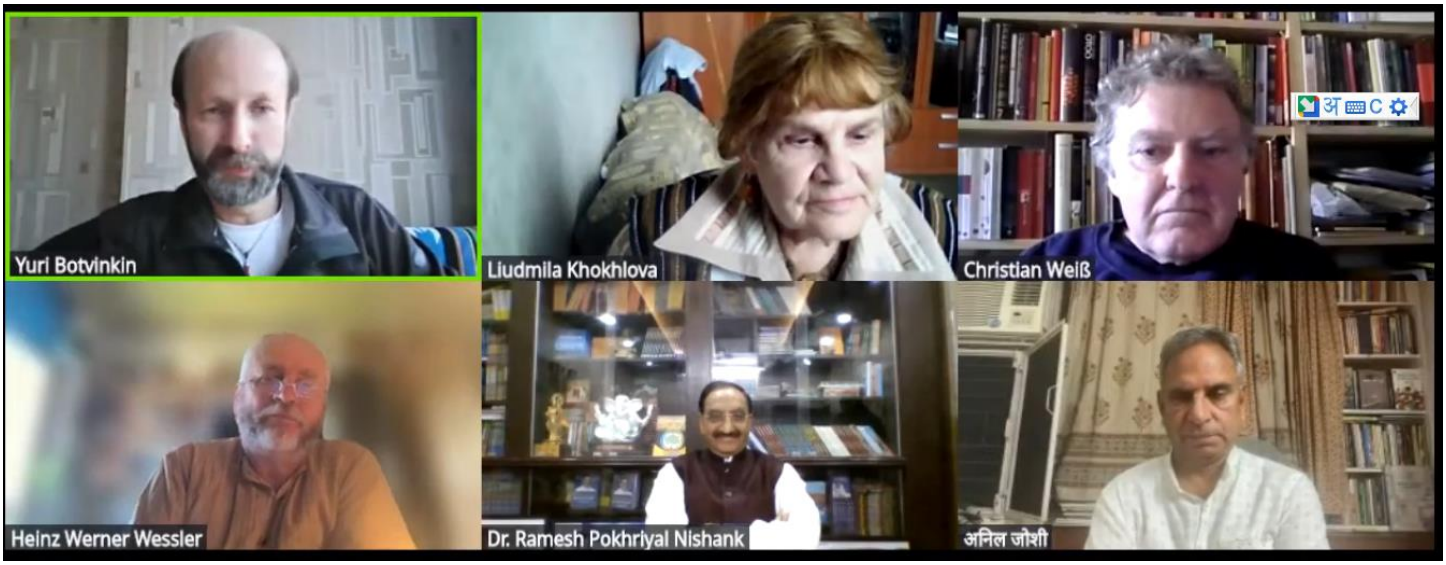

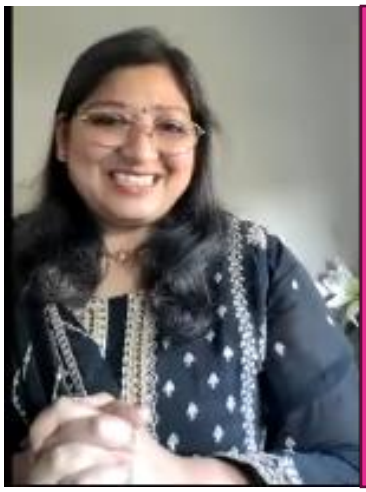

27 सितम्बर 2026
स्क्रीन पर सिमटा
वैश्विक हिन्दी परिवार



.... विदेशी मूल के हिन्दी प्रेमी

इस ऐतिहासिक आयोजन को एक सूत्र में पिरोया बर्लिन में बसी भारतीय मूल की दीपा दिनेशनील ने, स्वागत उद्बोधन दिया पुणे, महाराष्ट्र (भारत) से स्वरांगी साने ने। कार्यक्रम की प्रस्तावना किरण खन्ना ने रखी जबकि धन्यवाद ज्ञापन लन्दन से डॉ. अरुणा अजितसरिया से दिया। सम्मान पात्र वाचन के लिए भारत से विनयशील चतुर्वेदी तथा डॉ. वरुण कुमार, जर्मनी से रुद्रदेव देवलुपल्ली, तथा थाईलैंड से शिखा रस्तोगी का सहयोग मिला। कार्यक्रम में भारत से विजय कुमार मल्होत्रा, जवाहर कर्नावट, दिनेश कुमार, जयंत कुमार, सृष्टि भार्गव, तथा प्रताप कुमार, सिंगापूर से शार्दुला नोगजा (कवयित्री), बर्मिंघम से तितिक्षा शाह (कवयित्री), कनाडा से डॉ. शैलजा सक्सेना समेत कई देशों के हिंदी सेवियों की सक्रीय भागीदारी रही। हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय और उन पर अमल करने पर विचार पेश किए गए। हिन्दी सेवा में रत विद्वानों का यह अपनी तरह का अद्भुत व सफल आयोजन रहा।





लेडीज़ कॉर्नर बर्लिन ने मनाया 40वें साल का जश्न

भारतीय संस्कृति में ढली एक खूबसूरत शाम; नृत्य-संगीत से गूंजा सभागार

वर्ष 1984 से आरम्भ हुआ एक सफ़र उस समय और भी हसीन हो गया जब इसके सभी यात्रियों ने इसके चालीसवें पड़ाव पर पहुँचने का जश्न एक साथ बड़े जोश और उल्लास के साथ मनाया। इस मौके पर उन सभी स्तंभों को याद किया गया जिनके अथक प्रयासों से यह स्त्री-समूह अस्तित्व में आया। 'लेडीज़ कॉर्नर' नाम से प्रतिष्ठित इस समूह का सौभाग्य है कि इसे स्थापित करने वाले स्तंभों में से सुशीला शर्मा हक़ नाम का स्तम्भ आज भी इनके साथ मजबूती के साथ खड़ा है। सुशीला हक़ के नियमित मार्गदर्शन और दूरदर्शिता ने इस समूह को कभी कमज़ोर अथवा निष्क्रिय नहीं होने दिया। इसके वर्तमान को-ऑर्डिनेटर द्वय कृष्णा चटर्जी और रेणु कपूर ने भी इस समूह की जिम्मेदारियों को निभाते हुए इसे प्रासंगिक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वास्तव में यह समूह भारत से दूर एक ऐसा भारतीय आत्मीय परिवार है जहाँ हर स्त्री को अपना आकाश और अपने हिस्से की ज़मीन मिल जाती है।

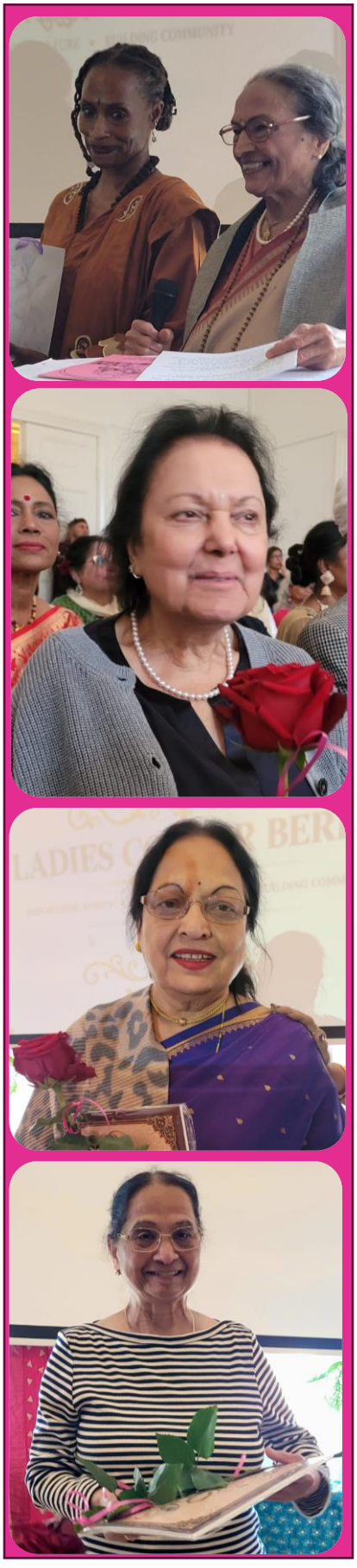





पुस्तक विमोचन: रेणु कपूर, कृष्णा चटर्जी, सुशीला हक़ और कविता पॉल

पुस्तक विमोचन
40 वर्ष विशेषांक

लेडिज़ कॉर्नर ने अपनी चालीसवीं सालगिरह पर इसकी संस्थापिका सुशीला शर्मा हक के कर कमलों द्वारा “40 ग्लोरियस यर्स ऑफ़ लेडीज़ कॉर्नर बर्लिन” पुस्तक का विमोचन किया। यह क्षण उपस्थित सभी अतिथियों के लिए गौरवपूर्ण और भावुक करने वाला था।

लेडीज़ कॉर्नर ने किया अतिथियों का सम्मान

फूलों व उपहारों ने जीता सबका मन; कलाकारों का भव्य स्वागत!

खुबसूरत चेहरे, रंग-बिरंगे परिधान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्वादिष्ट भोजन और इन सबके बीच गहरी मित्रता की बातें, कुछ वादे-मुलाकातें और ढ़ेरों हँसी-ठहाके – जब सबकुछ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हो तो भला ऐसी शाम कौन भूल पाएगा! कुछ ऐसा ही समां था बर्लिन स्थित सुसी सेंटर के उस सभागार का जहाँ लगभग 60 स्त्रियों और चंद पुरुषों की उपस्थिति ऐतिहासिक महत्त्व की बन गयी। बांग्ला, बॉलीवुड और पंजाबी गिद्धा के बीच किशोर कुमार और कुमार सानु के गीतों ने माहौल में मस्ती घोल दी थी। समूह के वरिष्ठ सदस्यों को शाल और उपहार से सम्मानित किया गया जबकि सभी कलाकारों को पारितोषिक देकर उनकी हौसलाअफजाई की गयी। लेडीज़ कॉर्नर समूह के सभी सदस्यों का आपसी प्रेम और सौहार्द्र अनुकरणीय और सराहनीय है। इस मौके पर समूह द्वारा किये समाजोपयोगी कार्यों, सांस्कृतिक योगदान और समूह के प्रति प्रतिबद्धता को भी खुलकर सराहा गया। चंद घंटों का यह कार्यक्रम जीवन भर की यादें दे गया।



वरिष्ठ-कनिष्ठ सदस्या

लेडिज़ कॉर्नर की सबसे वरिष्ठ 95 वर्षीया कृष्णा ब्रून समूह की सबसे छोटी सदस्या 45 वर्षीया दीपा दिनेशनील के साथ। ऐसे अद्भुत और सुखद संयोग ही लेडीज़ कॉर्नर को अद्वितीय और अनुपम बनाता है।



अमरजीत सिंह ने लेडीज़ कॉर्नर में हँसी के फ़व्वारे छोड़े

समूह से लम्बे समय से जुड़े वरिष्ठ अमरजीत सिंह ने माइक पकड़ते ही उपस्थित सभी लोगों को अपनी मनोहर और दिलचस्प बातों से गुदगुदा दिया। उनकी बातों में लेडीज़ कॉर्नर समूह और इसके सदस्यों के प्रति स्नेह भाव स्पष्ट रूप से झलक रहा था। कार्यक्रम में बर्लिन के अनेक प्रतिष्ठित लोगों की मौजूदगी रही जिनमें अंजना सिंह, योजना जैन, रेणु भुल्लर, दीपिका भाम्बरी, सपना, ग्लोरिया, सुधा, सुषमा, अनुराधा, कंचन, परमजीत, डिंपल, सीमा शामिल हैं।

गतिविधियाँ

03-04 अक्टूबर

SCHÖNEBERG PUMPKIN FESTIVAL 2026

Akazienstraße and Belziger Straße in Berlin-Schöneberg

05-11 अक्टूबर

बर्लिन फ़ूड वीक 2026

Bikini Berlin
और अन्य स्थानों पर

कृपया समय के लिए वेबसाइट देखें

09-18 अक्टूबर

फेस्टिवल्स ऑफ़ लाइट

festival-of-lights.de

बर्लिन के विभिन्न स्थानों पर आयोजन; अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें!

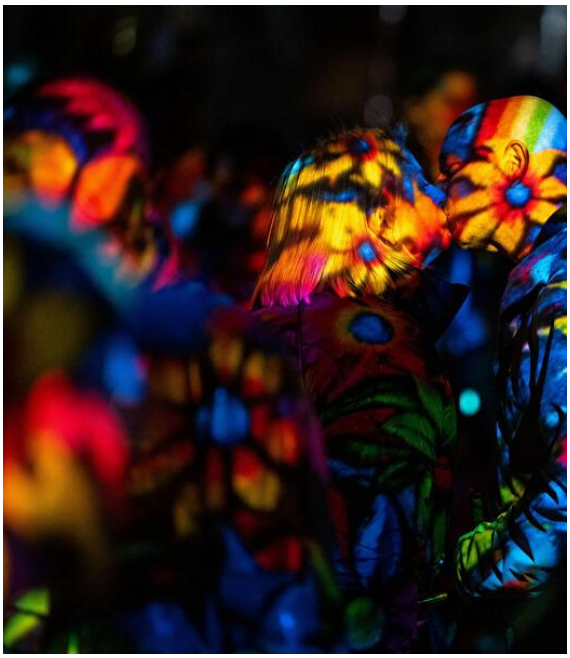



शुक्रवार 09 अक्टूबर, 19:30

भरतनाट्यम की एक शाम

Europäisches Theaterinstitut, 20, Rungestraße, Mitte, Berlin, DE, 10179

Tickets: Eventbright

रविवार, 18 अक्टूबर, 19:30

LAKKHICHHARA LIVE AT IGNITE DURGA PUJO

Sri Ganesha Hindu Tempel e.V., 106, Hasenheide, Berlin, DE, 10967

09-24 अक्टूबर

ऑक्टोबरफेस्ट

बर्लिन के विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग तिथियों में

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें!